**कक्षा-6**

**हिन्दी , वसंत भाग-1**

**पाठ-7 ‘साथी हाथ बढ़ाना’**

**पाठ्य सामग्री**

**कविता एवं कवि का परिचय- ‘**साथी हाथ बढ़ाना’ कविता प्रसिद्ध कवि (शायर) साहिर लुधियानवी ने लिखी है। इस कविता को हम ‘गीत’ कह सकते हैं। यह गीत प्रसिद्ध हिन्दी फिल्म ‘नया दौर’ में भी लिया गया है। यह गीत मुख्य रूप से मजदूरों को केंद्र में रखकर लिखा गया है।

**कविता एवं उसका भावार्थ-**

साथी हाथ बढ़ाना ,

एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना

साथी हाथ बढ़ाना।

हम मेहनतवालों ने जब भी, मिलकर कदम बढ़ाया

सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया

फौलादी हैं सीने अपने फौलादी हैं बाहें

हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें

साथी हाथ बढ़ाना ।

**भावार्थ-** इन पंक्तियों में कवि एक प्रकार से मजदूरों को संबोधित करते हुये उन्हे एक दूसरे के काम में हाथ बंटाने को कहते हैं। वे कहते हैं कि एक इंसान अकेला ही बोझ उठाएगा तो थक जाएगा लेकिन यदि उसी बोझ को हम सब मिलकर उठाएंगे तो वह किसी के लिए भी बोझ नहीं रह जाएगा।

कवि कहते हैं कि जो लोग मेहनत करते हैं, वे जब भी किसी कार्य को करने के लिए मिलकर शुरुआत करते हैं तो असंभव से असंभव दिखने वाला कार्य भी संभव हो जाता है। जब हम मेहनत से कार्य करते हैं तो समुद्र भी हमे रास्ता दे देता है और ऊँचे-ऊँचे पर्वत भी सिर झुका देते हैं। अर्थात् मेहनत करने वालों के लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं होता। हमारे सीने और बाहें फौलादी हैं अर्थात् लोहे की तरह मजबूत हैं, इसलिए हम चट्टानों में भी रास्ता बनाने की हिम्मत रखते हैं। फौलादी सीने और फौलादी बाहों का अर्थ है कि हम हृदय से भी मज़बूत हैं और शरीर से भी। हम शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों से बड़े से बड़ा दुख झेल सकते हैं।

मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना

कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना

अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक

अपनी मंज़िल सच की मंज़िल, अपना रस्ता नेक

साथी हाथ बढ़ाना।

**भावार्थ-** इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि हमारी अर्थात् मजदूरों की किस्मत में मेहनत ही लिखी है। जब हमारे हाथ की लकीरों में मेहनत करना ही लिखा है तो फिर इससे डरने की क्या आवश्यकता है? अर्थात् हमें मेहनत करने से डरना नहीं चाहिए। मज़दूरों ने दूसरों अर्थात् अंग्रेजों के लिए भी मेहनत की है और आज उन्हे अपने देश के लिए मेहनत करनी है। इसलिए कवि उनसे कहते हैं कि यदि हम दूसरों के लिए मेहनत कर सकते हैं तो अपने लिए क्यों नहीं। मज़दूरों के सुख दुख समान होते हैं अर्थात् वे ही एक-दूसरे की तकलीफ को भली-भाँति समझ सकते हैं। लेकिन उनकी मंज़िल और उनका रास्ता सदैव सच्चाई का होता है। वे किसी को दुख देकर अपना फ़ायदा नहीं सोचते। वे सिर्फ़ भलाई के रास्ते पर चलते हैं और झूठ और बेईमानी से सदा दूर रहते हैं।

एक से एक मिले तो क़तरा, बन जाता है दरिया

एक से एक मिले तो ज़र्रा, बन जाता है सेहरा

एक से एक मिले तो राई बन सकती है परबत

एक से एक मिले तो इंसा बस में कर ले किस्मत

साथी हाथ बढ़ाना।

**भावार्थ-** इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि जिस प्रकार बूँद-बूँद से समुद्र का निर्माण हो सकता है, छोटे-छोटे कण मिलकर रेगिस्तान का निर्माण कर सकते हैं, एक-एक राई मिलकर पूरा पर्वत बना सक्ति है उसी प्रकार यदि हर इंसान मिल जाए तो अपनी किस्मत को भी वश में किया जा सकता है। अर्थात् हम जो चाहें कर सकते हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि पुरानी सूक्ति ‘एकता में शक्ति को ही स्थापित करते हैं। मिलकर कार्य करने से दुनिया का कोई भी कार्य असंभव नहीं रह जाता है, इसलिए हमें सदैव एक दूसरे की तरफ सहायता का हाथ बढ़ाना चाहिए।

**इस कविता में आए कठिन शब्द और उनके अर्थ**

**शब्द अर्थ**

परबत पहाड़

फौलादी लोहे से बने हुये

गैर दूसरे/ पराए

खातिर के लिए

क़तरा बूँद

दरिया समुद्र

ज़र्रा कण

सेहरा रेगिस्तान